पुजारी : प्रभु, तेंदू नारायण, अपना भक्त समझ कर मुझे क्षमा करो प्रभु। मैं अभी दूसरा भोग लाता हूँ, आपकी भूख, आपकी पीड़ा मैं नहीं देख सकता, देखकर सहन नहीं कर सकता... इस पाप के लिए क्षमा कीजिये भगवान...शांताकार...(कहते हुए थाली लेकर जल्दी–जल्दी जाता है।)

भूखा : सच है रे ! मेरे भूख की पीड़ा नहीं देख सकते, मनुष्य से अधिक प्रेम पत्थर की मूर्तियों से करते हो, मनुष्य भी अब पत्थर हो गया है। इसीलिए मनुष्य अब खाने वाले भोजन को मिट्टी में मिलाते हैं।

पुजारी : (भोग की थाली लिए आता है) शांताकरम, प्रभु स्वीकार करें, पेट भर स्वीकार करें, तेंदू नारायण स्वीकार करें(कुछ याद करने की मुद्रा में सोचता है और वहाँ से चला जाता है।पुजारी के जाते ही भूखा थाली उठाकर उसे सूँघते हुए आनंद लेता है और प्रसन्न हो खाना शुरू कर देता है। तभी पुजारी के चिल्लाने की आवाज आती है ।) प्रभु (भूखा अकड़ जाता है)

पुजारी : धरती वासियों मेरा जन्म सफल हो गया, मैं तो धन्य ही हो गया। भगवान को भोग खाते हुए देखने वाला पहला पुजारी मैं हूँ। अहो भाग्य हमारे, प्रभु यह कोई स्वप्न है या तेरी लीला। (पुजारी चिकोटी काटता है ...) प्रभु यह कोई स्वप्न नहीं माया नहीं, यह तो शत–प्रतिशत सत्य है। ओहो मेरा तो जीवन ही सफल हो गया।(श्लोक पढ़ता है। ट्रस्टी अपने दो सहचरों के साथ प्रवेश करता है।)

ट्रस्टी : पुजारी जी, यह क्या, पागल तो नहीं हो गये हो,या फिर दारू ज्यादा चढ़ा लिए हो? पुजारी! (पुजारी ट्रस्टी को देखकर सिर्फ हँसता है। ट्रस्टी गुस्से और आक्रोश से पुजारी को झकझोरता है जिससे पुजारी सामान्य स्थिति में आ जाता है।)

पुजारी : अपूर्व, असाधारण, अनन्य घटना। ट्रस्टी जी।

ट्रस्टी : अरे क्या बकते हो, कहीं दिन में ही भांग तो नहीं खा लिया।कहना क्या चाहते हो।

पुजारी : अपने भगवान।

ट्रस्टी : आगे भी कुछ बोलोगे!

पुजारी : आज उन्हें प्रसाद खाते हुए अपने आँखों से देखा है मैंने।

ट्रस्टी : आह हाँ,क्या पुजारी तुमने नाइट ड्यूटि की है? (हँसता है)।

पुजारी : नहीं ट्रस्टी जी, भागवतगीता की सौंगंध खा कर कहता हूँ। मेरी बातों पर विश्वास नहीं है तो आप भगवान को एक बार चींटी काटकर देखें।

ट्रस्टी : आह,चलो यह भी कर लेते हैं। (ट्रस्टी भगवान के पास जाता है और चींटी काटता है। भूखा ज़ोर से चिल्लाता है) अरे भगवान (दूर गिर जाता है।)

पुजारी : कम से कम अब तो विश्वास हुआ, है ना।

ट्रस्टी : हाँ प्रभु तेंदू नारायण मैं मूर्ख हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। क्षमा कीजिए प्रभु। (शाष्टांग प्रणाम करता है, उठता है।)

ट्रस्टी : पुजारी जी भगवान ने मनुष्य का अवतार लिया है, किसी को भी मालूम पड़ा तो उठा ले जाएँगे। मंत्र आदि ज़ोर से न पढे, मंदिर को बंद कर, ताला लगाकर बाहर बैठ जाओ। कोई पूछे तो कहना कि वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल कर रहा हूँ। बाकी का सब मैं देख लूँगा।

पुजारी : जी हाँ... नहीं तेंदू नारायण (पुजारी चिल्लाता है।)

ट्रस्टी : यह क्या, अभी तो तुमसे कहा कि चिल्लाना नहीं, अगर चिल्लाना है तो बाहर चलो।

पुजारी : हे भगवान यह कैसी महिमा है। क्या हुआ आपके सुंदर से लक–दक हमेशा चमकने वाले पेट को, प्रभु क्या मुझसे कोई पाप हुआ है या फिर भोग में कोई कमी हुई है। बोलो भगवान, बोलो, अगर तुम नहीं बोलोगे तो इसी गर्भगृह की दीवारों से सिर पटक–पटक कर मैं अपना प्राण त्याग दूंगा।

ट्रस्टी : पुजारी जी! (चिल्लाता है)

पुजारी : ट्रस्टी जी आप बीच में ना आयें!

ट्रस्टी : ऐ पुजारी मैं तुमको नहीं बोल रहा, वहाँ देखो, भगवान को दाढ़ी आ गई है।

पुजारी : क्या!

ट्रस्टी : पुजारी जी यह क्या है। अपने भगवान की क्या हालत हो गई है,शक्ल बिलकुल मंदिर के बाहर पड़े भिखारी भूखे नारायण जैसी हो गई है।

पुजारी : उस मूर्ख भिखारी से अपने भगवान की तुलना, पश्चाताप करें (मुख को मारकर, रोना)। भगवन अपने भक्तजनों से यह कैसी परीक्षा ले रहे हैं आप। आपके पेट का बढ़ जाना इसे मैं क्या समझूँ, कहीं यह आपका ग्यारहवाँ अवतार तो नहीं? क्या आप भी आज के फैशन के चक्कर में आ गए और दाढ़ी बढ़ा लिए? कहीं यह कलयुग का अंत तो नहीं।

ट्रस्टी : पुजारी जी मुझे तो बड़ा डर लग रहा है। भगवान ऐसे रहे तो कौन आयेगा। इनका नॉर्मल होना ज़रूरी है। नाई को बुलाकर दाढ़ी बनवाइये, सबसे अच्छे डॉक्टर को बुलावाइए। जितना खर्चा हो, हो जाने दीजिये, उसे चंदे से वसूला जायेगा। अच्छे से अच्छे टॉनिक, दवाइयाँ, टेबलेट जो भी लगे भोग में चढ़ाइये।

पुजारी : चुप, यह दवाइयों से समाप्त होने वाली पीड़ा नहीं है।

ट्रस्टी : फिर क्या करना होगा।

पुजारी : अपने भगवान के साथ कुछ अनर्थ हो गया है। मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है। हमारे शहर में स्वामी समितानन्द आए हुए हैं। वो एक महान योगी हैं। वे ही अब हमें कोई उपाय बता सकते हैं।

ट्रस्टी : फिर सोचते क्या हो, भागो जल्दी।

पुजारी : मेरे प्रभु की देखभाल करें ट्रस्टी जी।

ट्रस्टी : मैं इस मंदिर का ट्रस्टी हूँ और तुम मुझको ही समझाते हो। जल्दी जाओ और फौरन समितानन्द स्वामी को पकड़ लाओ (पुजारी जाता है।)

क्षमा कीजिये प्रभु आपका मुकुट ले जाकर मैंने शांता को दे दिया, मंदिर से आए लाभ से मैं अपने पुत्र को अमेरिका में पढ़ा रहा हूँ। आपकों चढ़े प्रसाद को बेचकर प्राप्त धन से अपने साले के लिए होटल खोला है। किसी को भी ना बता पाने लायक ना जाने कितनी गलतियाँ मैंने की है। मुझे क्या मालूम था कि आप मनुष्य का रूप धारण कर लेंगे? मुझे क्षमा कीजिये प्रभु।

(कहीं से हरे राम का डिस्को म्यूजिक सुनाई देता है। पुजारी, समितानन्द और उसके चार भक्त आते हैं।)

समिता : कहाँ... वेअर... कहाँ है तुम्हारा भगवान हम देखना मांगता है।

पुजारी : यहीं है सारे जग के पालनहार, जगदीश्वर स्वामी।

समिता : हम वेद को पॉकेट साइज़, रामायण– भागवतगीता को माचिस साइज़ में परिवर्तित किया है। बात को छोटा करके बोलो।

ट्रस्टी : क्या कहें स्वामीजी हमारे प्रभु तेंदू नारायण कभी इतने हट्टे–कट्टे, किसी आखाड़े के पहलवान की तरह, रेस के घोड़े के समान हुआ करते थे। ना जाने कौन सी भूल, कैसा अनर्थ हो गया, कि अब उनकी हालत ऐसी हो गई है।

समिता : कुछ भी ना कहो, हम सब समझ गया है। सब बाजू हटो। (भगवान को हर कोने में ढूँढता है। हंसने लगता है।) समझ गया, तुम्हारे भगवान पर जादू है।

ट्रस्टी / पुजारी : हाँ?(आश्चर्य से)

समिता : हाँ, अखिल भारतीय नास्तिक समाज वालों ने कर्नाटक के बंगलुरु में हल्ली के तांत्रिक की सहायता से जादू–टोना किया है।

ट्रस्टी : अब क्या रास्ता है स्वामी।

समिता : कुछ नहीं, पहले ऐसे कई केस देख चुका हूँ।महालिंग देवस्थान के भगवान की कसम, भगवान को शैम्पेन मांगता है, अगर भलाई चाहते हो तो सबसे पहले भगवान को ब्रांडी की भोग लगाओ। (भूखा खुश होता है)

भूखे : भक्तजन (सब उधर मुड़ जाते हैं।) उनके सलाह अनुसार भोग चढ़ाओ।

पुजारी : प्रभु! यह कैसी इच्छा है।

समिता : अखिल भारतीय नास्तिक समाज और विश्व–नास्तिक समाज वालों ने मिलकर जादू किया है,यह उसी का असर है, यही कारण है कि प्रभु ने दारू की मांग की है। (पुजारी तथा ट्रस्टी स्वामी के पाँव पर गिरते हैं।)

पुजारी : स्वामीजी, मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।

ट्रस्टी : हमारे भगवान की रक्षा करें।

समिता : एक ही मार्ग है, "महाजागरण", भगवान का "महाजागरण"।

पुजारी : आह, महाजागरण।

ट्रस्टी : कहिए स्वामी।

भूखा : ब्रांडी का भोग चढ़ाओ मूर्ख!

समिता : कालीमिर्च का सूप बनाकर चढ़ाओ, तुम्हारे स्वामी जल्दी ठीक हों जाएँगे।

पुजारी : कालीमिर्च का सूप।

ट्रस्टी : स्वामी अभी बाल्टी भरकर मागवाता हूँ। (भूखा घबरा जाता है।)

भूखा : क्या? कालीमिर्च का सूप?

पुजारी : हाँ प्रभु।

भूखा : नहीं मुझे नहीं चाहिए, मुझे तो बहुत कुछ खाने की इच्छा है। चिकेन कबाब, मटन मसाला, फिश फ्राई, प्रोन करी और...

पुजारी : नारायण–नारायण। यह कैसी इच्छा है स्वामी। यह सब तो सुनना भी पाप है।

भूखा : नहीं, मेरे जीवन में कई इच्छाएँ हैं, कई आशाएँ शेष है। मेरी आज्ञा का पालन करो, जो मैं कहता हूँ सब लेकर आओ।

ट्रस्टी : स्वामीजी यह कैसी माया है। भगवान अपनी इच्छाओं को ऐसे प्रकट कर रहे हैं, संसार में ऐसी विचित्र घटना देखी है क्या?

पुजारी : स्वामी मेरे भगवान को मुझे वापस दो, अगर जरूरत पड़े तो मेरे प्राण ले लो, लेकिन मेरे प्रभु मुझे वापस कर दो।

समिता : समझ गया, तुम्हारे भगवान पर किसी बेवड़े भूत का साया है।

भूखा : हाँ रे, भूत चढ़ा है, भूख का भूत, गरीबी का भूत, जिंदा रहने का भूत...

पुजारी : स्वामी देख रहे हैं आप, अब तो हमारे भगवान की मति भी भ्रष्ठ हो गई है।

समिता : समझ गया,समझ गया,अब तो एक ही रास्ता बचा है, मंदिर को बंद करके...

पुजारी : बंद करके...

समिता : एक महाजागरण

पुजारी : कहिए स्वामी

समिता : बिना स्वांस छोड़े, सामराणी दीप लाओ।

पुजारी : सामराणी दीप का धुआँ स्वामी।

समिता : हाँ स्वांस छोड़े बिना।

भूखा : हाँ? क्या धुआँ? पापियों मुझे मार डालोगे क्या?

पुजारी : अमंगल की समाप्ती हो, आपको मारने नहीं प्रभू, पुनः जीवित करने के लिए।

ट्रस्टी : सोने के अंडे देने वाले भगवान को कोई मारता है क्या?

समीता : देर करोगे तो तुम्हें तुम्हारे भगवान प्राप्त नहीं होंगे, दरवाजे को फौरन बंद करो।

भूखा : अरे ठहरो रे ठहरो, मैं तुम्हारा तेंदू नारायण नहीं हूँ। इतने दिनों से तुम्हारे मंदिर के दरवाजे के सामने कुत्ते समान पड़ा भूखा नारायण हूँ। मुझे पहचानों पुजारी जी मुझे पहचानों।

ट्रस्टी : शिव के रूप में भिखारी, धोखा–धोखा।

भूखा : हाँ धोखा, मैंने धोखा किया है, भोजन के लिए भगवान का रूप बदलकर तुम्हारा भोग खाया है, मुझे बाहर निकाल फेंको। (सब एक–दूसरे का मुंह ताकने लगते हैं और ट्रस्टी तथा पुजारी शाष्टांग नमस्कार करते हैं।)

पुजारी : प्रभु यह कैसा अन्याय है, आपने आखिर इतनी हिन स्थिति क्यों धारण किया? मैंने क्या पाप किए हैं प्रभु, अपने आपको नीचा बताकर, दरवाजे पर पड़े भिखारी बोलने की क्या आवश्यकता आन पड़ी।

भूखा : पुजारी जी...

ट्रस्टी : उस मूर्ख भिखारी से आपकी कैसी तुलना प्रभु।

पुजारी : समितानन्द स्वामी, प्रभु की इन बहकी–बहकी बातों को अब मेरे कान नहीं सुन सकते, अब मुझसे सहन नहीं होता। आगे की कार्यक्रम सम्पन्न करें।

ट्रस्टी : पहले दरवाजा बंद करो।

भूखा : मैं जिंदा रहना चाहता हूँ, मुझे मत मारो, मैं इंसान हूँ कोई भगवान नहीं। एक मामूली इंसान। एक ऐसा इंसान जिसे तुम्हारी दुनिया इंसान नहीं समझती मनुष्य होते हुए भी कभी मनुष्यता का भाव नहीं मिला, ऐसा वंचित हीन मनुष्य हूँ मैं। तुम्हारे नागरिकता के लिए यह न्यायसंगत है क्या कि मनुष्यों के प्रति जताने वाले करुणा मनुष्य को न जताकर भगवान को जताते हो।

भगवान को भोग बताकर रोज ना जाने कितने अन्न बर्बाद कर देते हो, मगर किसी गरीब भूखे के स्पर्श मात्र से तुम्हारा धर्म बर्बाद होने लग जाता है। खुद तो गाँजा पीते हो, शराब का सेवन करते हो, भांग खाते हो और ऊपर कहते हो भगवान का प्रासाद है। नहीं रहना मुझे यहाँ, मैं जा रहा हूँ।

(भागने का प्रयत्न करता है। ट्रस्टी, पुजारी आदि उसे अंदर ढकेलते हैं।)

पुजारी : प्रभु जब तक आप अपने असली रूप में नहीं लौट जाते, हम आपको कहीं नहीं जाने दे सकते।

ट्रस्टी : चाहे कितना भी खर्च हो, हम आपको बचाकर रहेंगे।

पुजारी : नहीं तो क्या? क्या ऐसा कहीं हुआ है, क्या पत्थर का भगवान कभी हिलडुलकर बात करता है। आपकी यह लीला सिर्फ हमारे यहाँ हुआ है। ट्रस्टी जी मैं सामराणी का धुआँ तैयार करता हूँ।

ट्रस्टी : हम आपको भगवान का सम्मान देते हैं फिर भी आप नहीं समझते, बार–बार इन्सानों की तरह हरकतें करने लगते हैं, क्यों। भोग का प्रसाद जब आप ही खा जाएँगे तो फिर हमारे लिए क्या बचेगा। (पुजारी सामराणी का धूप लाता है, गर्भगृह में धूप चढ़ाता है।)

भूखा : मैं आप लोगों के हाथ जोड़ता हूँ, पैर पड़ता हूँ, मुझे जाने दो, मैं भगवान नहीं भिखारी हूँ , मेरा विश्वास करो। धुएँ से मैं मर जाऊंगा, मेरा दम घुट जाएगा। हे भगवान तू कहाँ हैं, मैं मर रहा हूँ, मेरी रक्षा करो।(भगवान आता है।)

तेंदू : क्या है यह!

पुजारी : तू फिर आ गया।

तेंदू : हाँ, मनुष्य जैसा प्रतीत होने वाला मैं भगवान हूँ। अपनी अज्ञानता को समाप्त करो। यह अन्याय है।

ट्रस्टी : ऐ भिखारी तुम अंदर कैसे आ गए, और यह सब रोकने वाले तुम हो कौन।

तेंदू : मैं तेंदू नारायण हूँ।

पुजारी : तुम हमारे भगवान तेंदू नारायण हो, फिर वह जो मंदिर में हैं वह कौन है।

तेंदू : मंदिर में जो है वह कोई भगवान नहीं है बल्कि राक्षसमंत्र से बदला हुआ एक प्रतिरूप है।

समिता : चुप रहो, खामोश तुम अभी यहाँ से बाहर निकल जाओ।

तेंदू : क्यों समितानन्द स्वामी, विदेशी नागरिकता के मोह–माया में लिप्त। हर समय नशे का सेवन करने वाले, कहते हो भक्ति एक नशा है, जो स्वर्ग का मार्ग है। अभी तुमको स्वर्ग भेजता हूँ।(भगवान स्वामी का गला पकड़ता है।)

समिता : अब बात समझ में आयी। साजिश है यह, अखिल भारत नास्तिक समाज का सेक्रेट्री है यह। इसी ने हमारे भगवान पर मंत्रों का प्रयोग किया है।

भूखा : हे भगवान मेरी रक्षा करो, सांस नहीं ले पा रहा हूँ, मैं मर रहा हूँ मेरी रक्षा करो।

तेंदू : देख लिया इंसानी फितरत। तुम इन्सानों के सिने में दिल तो है, पर उसकी धड़कन तुम्हें सुनाई नहीं देती। तुम इंसान सिर्फ पत्थर पूजते हो, मनुष्यता से तुम्हें कोई लेना देना नहीं है। वास्तव में यह कोई मंदिर नहीं है, तुम लोगों की मरी हुई इंसानियत का कब्र है।

मैंने तो कभी जाति, धर्म, उंच–नीच की बात ही नहीं की। मैंने तो बस यह चाहा की एक ऐसा छत हो जिसके नीचे अभिमान, ईर्ष्या, द्वेषरहित सिर्फ इंसान एकत्र हों। जहां ज्ञान की ज्योति के प्रकाश में सिर्फ मानवता की बातें की जाए।

भूखा : हे भगवान, ऐसी बातें मत करो, वे तुम्हें मार डालेंगे। भाग जाओ यहाँ से। (भगवान सबसे बचकर भागता है। समिता, ट्रस्टी,पुजारी आदि मिलकर भगवान को पकड़ते हैं। सामराणी धुआँ बढ़ता है।)

भूखा : हे भगवान मेरा अंत हो रहा है। यह दुनिया कितनी ढोंगी है जहां इंसानियत और भूख की कोई कीमत नहीं। प्रभू ऐसी दुनिया की सृष्टि किस लिए,जहां हर वक्त इंसान ही इंसान को मारने की ताक में है, जहाँ मनुष्य हर स्त्री हर, महिला पर वासना की निगाह रखता है। ऐसा समाज क्यों जहां महिलाओं

को निर्वस्त्र घुमाया जाता हो। प्रलय लाओ प्रभु, नाश कर दो इस दुनिया का। इस तरह के मनुष्य से भरा हुआ संसार हमें नहीं चाहिए। इससे अच्छा तो बेजुबान जानवर हैं प्रभु।

तेंदू : हे मानव, मैंने तो सिर्फ इंसान बनाया था, ऐसी दुनिया का निर्माण मैंने कभी किया ही नहीं था। मेरा बनाया सब कुछ समाप्त हो गया है, मेरी सृष्टि मेरे ऊपर ही हावी हो रही है। मैं कमज़ोर एवं नाकाबिल हो गया हूँ। मानव भगवान से भी शक्तिशाली हो गया है। तुम्हें ना बचा पाने वाला मैं भगवान नहीं हो सकता।

तेंदू : हे भगवान तुमको मैंने अपने ही हांथों से मार डाला।मैं तुम्हारे लिए भगवान नहीं हूँ। तुम ही मेरे भगवान हो।मेरी असमर्थता से पैदा हुए राक्षस मुझे मारने आ रहे हैं।मुझे क्षमा करो मानव!

पुजारी : प्रभु!

ट्रस्टी : मिल गया।

पुजारी : हाँ मिल गया मेरा भगवान मिल गया। जैसे अपने गोल–मटोल तोंद ले कर गए थे बिलकुल वैसे ही। हे अखिल ब्रम्हनायक, हमारी पूजा सफल हुई। हमपर दया करो, हमारी रक्षा करो।

समिता : यह सब हमारी महिमा का फल है।

पुजारी : अरे यह क्या, भूखा नारायण यहाँ पड़ा हुआ है। यह तो मर गया है, उसकी सारी पीड़ा आज दूर हो गई। देखते क्या हो, यह यहाँ मरकर इस पवित्र मंदिर को अपवित्र कर गया। अब इसका पश्चाताप करना होगा। इसके शव को मंदिर से बाहर ले जाओ।

समाप्त